237 P
818
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
आह्वानांक Call No. _____
अवाप्ति सं० Acc. No. 818

891.431
G959S

कुछ आरज़ू नहीं है
है आरज़ू तो यह है।
रखदे कोई ज़रा सी
ख़ाके वतन कफ़न में ॥

❀ वन्देमातरम् ❀

स्वराज्य की कुंजी

☞ पं० जवाहरलाल नेहरू ☜

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक—

सीताराम गुप्त अमरोहा

छोटेलाल जैन के प्रबन्ध से
शर्मा मैशीन प्रिंटिङ्ग प्रेस मुरादबाद में मुद्रित।

प्रथमवार १००० १९३० मूल्य =)

IMPERIAL RECORD DEP HOME
RECEIVED
30 MAR 1931

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 818
Date 22.12.51
GOVT. OF INDIA

प्रार्थना ।

❀ वन्दे मातरम् ❀

सुजालाम् सुफलाम् मलयज-शीतलाम् ।
शस्य-श्यामलाम् मातरम् । वन्दे० ॥
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम् ।
फुल्ल कुसुमित द्रुम-दल शोभिनीम् ॥
सुहासिनीम् सुमधुर भाषणीम् ।
सुखदाम् वरदाम् मातरम् । वन्दे० ॥
त्रिंश कोटि कण्ठकल कलविनोद कराले ।
द्विर्त्रिंश कोटि भुजैर्धृत स्वर कर वाले ॥
के वोले मांतुणीम् अवले ॥ १ ॥
वहु वल धारिणी नमामि तारिणीम् ।
रिपु-दल-वारिणीम् मातरम् । वन्दे० ॥
श्यालाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम् ।
वन्दे मातरम् ॥ २ ॥

क़ौम के ख़ादिम की है जागीर वन्दे मातरम् ।
है वतन के वास्ते, अक्सीर वन्दे मातरम् ॥
ज़ालिमों को है उधर, बन्दूक़ पर अपनी ग़रूर ।
है इधर हम बेकसों का, तीर वन्दे मातरम् ॥
क़त्ल की हम को न दें, धमकी हमारे सब्र से ।
तेग़ पर हो जायगा, तहरीर वन्दे मातरम् ॥
किस तरह भूलूं इसे, जब कि क़िस्मत में मेरी ।
लिख चुका है राक़िमे तहरीर वन्दे मातरम् ॥
फिक्र क्या जल्लाद ने, गर क़त्लपर बांधी कमर ।
रोक देगा दूर से, शमशीर वन्दे मातरम् ॥

ज़ुल्म से गर करदिया, ख़ामोश मुझको देखना।
बोल उठेगी मेरी, तस्वीर बन्दे मातरम् ॥
सर ज़मीं इङ्गलेण्डकी, हिलजायगी दो रोज़में।
गर दिखाये गी कभी, तासीर वन्दे मातरम् ॥
सन्तरी भी मुन्तज़िर थे जय हर झंकार पर।
बोलती थी जेल में, ज़ञ्जीर बन्दे मातरम् ॥

गाना नं० ॥ ३ ॥

स्वदेशी प्रेम जनता में अगर एक बार हो जाये।
हमारा राज्य भारत में बिना तलवार हो जाये ॥
वस्त्र बनने लगें सुन्दर, हमारे हिन्द में जिस दम।
उसी दम मानचेस्टर का नरम बाजार हो जाये ॥
बिदेशी वस्तु लेने से जभी हम हाथ धो बैठे।
तभी आधीन यह अपनी कड़ी सरकार हो जाये ॥
सुदर्शन चक्र चर्ख़े को अगर सब हाथ में लेलें।
भयानक तोप भी उससे यहाँ बेकार हो जाये ॥
स्वदेशी प्रेम मिल जायें अगर "श्रीराम" भारत में।
बगीचा हिन्द का सूखा अभी गुलज़ार हो जाये ॥
न बेचें जो रुई अपनी कभी हम हाथ ग़ैरों के।
बनाना वस्त्र का उनको बहुत दुश्वार हो जाये ॥
बचालें द्रव्य जो अपना विदेशी के लुटेरों से।
अभी निर्धन हमारा देश यह धनवान हो जाये ॥

भावना गीत ॥ ४ ॥

मादरे हिन्द की तस्वीर हो सीने पै बनी।
बेड़ियां पैरों में हों और गले में कफनी ॥
आज से शबे वफ़ा का यही जौहर होगा।

फ़र्श काँटों का हमें फूलों का बिस्तर होगा ॥
फूल हो जावेगा छाती पै जो पत्थर होगा ।
क़ैदखाना जिसे कहते हैं वही घर होगा ॥
सन्तरी देख कर उस तोप को शरमायेंगे ।
गीत ज़ंजीर की झनकार पै हम गायेंगे ॥
दिल तड़पता है कि स्वराज का पैग़ाम मिले ।
कल मिले आज मिले सुबह मिले शाम मिले ।
हुक्म हाकिम का है फ़रियाद ज़बानी रुक जाये ॥
पर यह मुमकिन नहीं यह जोश जवानी रुक जाये ।
हो ख़बरदार जिन्हों ने यह अज़ीमत दी है ॥
कुछ तमाशा यह नहीं क़ौम ने करवट ली है ॥

भारतीयों को सन्देश भजन ॥ ५ ॥

१

पतित हो जाते हैं उठता नहीं है सर गुलामी में ।
कि बनजाता है जीवन मौत से बदतर गुलामी में ॥
हज़ारों मिट गई हैं जातियाँ फँस कर गुलामी में ।
तरस आता है उन पर जो रहे हैं मर गुलामी में ॥
ज़माने में कहीं भी है नहीं इज़्ज़त गुलामों की ।
जहां देखो वहीं पर हो रही दुर्गत गुलामों की ॥

२

कहीं पर अपनी बात कहने को तरसते हैं ।
कहीं कोड़े बरसते हैं कहीं पर बम बरसते हैं ॥
कहीं हथियार लेकर टूट पड़ते उनपै दस्ते हैं ।
सुने फ़रियाद उनकी कौन सारे बन्द रस्ते हैं ॥
दयानिधे, हैं दयानिधे पर दया इतनी नहीं करते ।
मदद उनकी करें क्या जो मदद अपनी नहीं करते ॥

३

गुलामी उठ रही है दुनियां से क़हरे खुदा उट्ठो ।
वतन का दर्द है जो कौम की है कुछ दया उट्ठो ॥
बजाते बन्दगी थे अब ज़माना बह गया उट्ठो ।
छिड़ी है जंगे आज़ादी उठो तुम भी ज़रा उट्ठो ॥
अगर उठते नहीं तो उठ न जाओ तुम ज़माने से ।
बहुत से पस्त हिम्मत हो गये हैं गुम ज़माने से ॥

४

अगर है जिन्दगी मंजूर तो आजाओ मैदां में ।
हज़ारों कैद कड़ियाँ झेलते हैं आज ज़िन्दां में ॥
मिलाते हाँ रहे अबतक बहुत सरकारकी हाँमें ।
करो निज धर्मकी रक्षा खलल आये न ईमां में ॥
गुलामी का लगा सदियों से यह रोग तो छुटे ।
असहयोगी बना अन्याय से सहयोग तो छुटे ॥

५

सहारा गैर का क्या देश का तो आसरा तुम हो ।
सुखी हो कैसे माता जब गुलामों से सिवा तुम हो ॥
गुलामी का मरज़ है वैद्य गांधी हैं दवा तुम हो ।
करो साहस ज़माना देखले तुमको कि क्या तुम हो ॥
तुम्हारी मुक्ति की हैं मुक पूर्वज गिन रहे घड़ियां ।
लगाओ जोर सब मिलकर तड़ातड़ तोड़दो कड़ियां ॥

६

स्वयं सेवक बनो सच्चे समझ कर मर्म सेवा का ।
न समझो खेल इसको है कठिन अतिधर्म सेवा का ॥
पतित जन को उठाना है यही सत्कर्म सेवा का ।
बढ़ाओ प्रेम अब बाज़ार कर दो गर्म सेवा का ॥

बना हर एक को दो है विजय चर्खे में खद्दर में ।
सुना दो राष्ट्र के स्वातन्त्र्य का सन्देश घर घर में ॥

७

विदेशी वस्त्र मत रखो गुलामी का निशाना है ।
अगर ग़ैरत है कुछ तुम में अगर कुछ तुम में पानी है ॥
तुम्हें खद्दर चिकन है, आमदानी कामदानी है ।
किसी सूरत से नैया पार यह खेकर लगानी है ॥
समय है वीरता का बुज़दिली का राग जो छेड़ा ।
नहीं फिर बच सकोगे है पड़ा मँझधार में बेड़ा ॥

८

विदेशी वस्त्र का जो स्वार्थ वश व्यापार करते हैं ।
वह अपने हाथ अपने देश का संहार करते हैं ॥
बने मीठी छुरी हैं मातृ-भू पर वार करते हैं ।
दग़ा करते हैं अपने साथ पापाचार करते हैं ॥
स्वयम् छल जायँगे छलिया, छलेगा इनको छल इनका ।
बँधो है पाप की गाँठें मिलेगा इनको फल इनका ॥

९

बने सब देश के सेवक यही सेवा का अवसर है ।
चलें सब सत्य के पथ पर साथ देने वाला ईश्वर है ॥
किसी का भय नहीं जो एकता हममें परस्पर है ।
न अपनी आन जाने दें यही मर्दों का जौहर है ॥
बतन का दुश्मनों से दुख उठायेंगे ज़माने में ।
डुबो कर नाम हम क्या मँह दिखायेंगे ज़माने में ॥

१०

ग़रज यह है कि है अवसर कठिन संग्राम का अब तो ।
बहुत सोये जवानो वक्त है अब काम का आया ॥

उठो बाँधो कमर बीड़ा तुम्हारे नाम का आया ।
अगर मन में तुम्हारे मोह कुछ धन धाम का आया ॥
उसे ममता समझ कर कृत अपमान भंग होने दो ।
विजय होगी तुम्हारी धर्म की अब जंग होने दो ॥

११

करोगे और क्या तुम अस्त्र सच्चा अस्त्र साहस है
प्रहारों से बचाने को बस अहिंसा ढाल ही बस है ॥
ग़ज़ब का जोश है तुम में फड़कती अब तो नस २ है ।
तुम्हारे हौसले ये देख कर माता को ढ.ढस है ॥
दमन को दम न लेने दो करो नाकों में दम उसका ।
बढ़े आगे चलो ऊमने न देना क़दम उसका ॥

१२

पड़ी हों हथकड़ी, बेड़ी, पड़ा हो तौक़ गर्दन में ।
छिड़ी हो तान आज़ादी की ज़ंजीरों की झन २ में ॥
खड़े हो तान कर सीना निडर गोलों की सन २ में ।
न आये मैल तेवर पर न शंका हो कभी मन में ॥
बली सत्याग्रही का बाल बाँका कर नहीं सकते ।
अमृत पुत्रों अमर यशालो, अमर हो मर नहीं सकते ॥

भजन नं० ॥ ६ ॥

बढ़ो वीरो विजयी होओ !
पड़े मत गफलत में सोओ !

गुंजाकर माता जय नाद, उठो आओ बनके प्रहलाद ।
करो बरबादी को बरबाद, बनो दुनिया में तुम आज़ाद ॥
कुयश की कालिख को धोओ !
बढ़ो वीरो ! विजयी होओ !
निराशा-नदकी कुटिला कीच न बहने दो उर अन्तर बीच ।

सत्यकी साहससे असि खींच कपट से कहदो भागो नीच ॥
भाग्य का रोना मत रोओ !
बढ़ो वीरो विजयी होओ !
स्वावलम्बन की गहो कमान, ऐक्य का जोड़ो उस में बान ।
मर्द होकर मारो मैदान, निबाहो हरदम अपनी आन ॥
विपतिमें धीरज मत खोओ !
बढ़ो वीरो ! विजयी होओ !
कर्म योगी हो ठोको ताल, स्वदेशी की गह कर ढाल ।
तोड़ दो कुटिल नीति के जाल, देश फिर होवे मालामाल ॥
बीज अब उन्नति के बोओ !
बढ़ो वीरो ! विजयी होओ !

भजन ॥ ७ ॥

कर जाओ काम दोस्तो भारत की शाँ रहे ।
दुनियाँ में तुम रहो न रहो पर निशाँ रहे ॥
तूफाँ है रात तारी है लहरें हैं जोश पर ।
उठ बैठो जिसमें कश्ती बचे बादबाँ रहे ॥
तुम नसलके हफ़ीज़ बनो कुछ कर तो दिखाओ ।
ता नाम लेवा कोई तो अय मिहरबाँ रहे ॥
कैसा जमाना आया कि तख़्ता पलट गया ।
अब वह न गुल न बाग़ न बाग़बाँ रहे ॥
अब ग़ौर करने सोचने का वक्त है कहाँ ।
खं भर दो अपना जिसमें कि यह नीमजाँ रहे ॥

भजन नं० ॥ ८ ॥

खाओगे ग़म यह कब तक ग़मख़ार होने वालो ।
ग़फ़लत की नींद से आ बेदार होने वालो ।
अपने हक़ूक़ लेकर तय्यार होने वालो ॥

मैदान में उतर कर आगे बढ़ो बढ़ो बस।
हुब्बे वतन की मय से सरशार होने वालो॥
आज़ाद बन दिखाओ हस्ती को या मिटादो।
नामे गुलाम पर अब बेज़ार होने वालो॥
बेबस की ज़िन्दगी में कब तक पड़े रहोगे॥
आखिर तो कोई हद है हुशियार होने वालो॥
क्या बीतती है तुम पर सोचो तो ज़रा भाई।
खाओगे ग़म यह कबतक ग़मख़्वार होनेवालो॥

भारत माता से॥ ९॥

ऐ मादरे हिन्द ग़मगीन न हो दिन अच्छे आने वाले हैं।
आज़ादी का सन्देश तुझे अब जल्द सुनाने वाले हैं॥
माँ तुझको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ़ अईफी में।
मायूस न हो मग़रूरों को हम अब मज़ा चखाने वाले हैं॥
(कमज़ोर हैं और मुफ़लिस हैं हम गो कुञ्ज कफ़समेंबेकस हैं)
बेकस हैं लाख मगर माता हम आफ़त के पर काले हैं।
हिन्दु और मुस्लिम मिलकर चाहें जो कर सकते हैं॥
पय चर्खे कुहन हुश्यार हो तू पुरशोर हमारे नाले हैं।
गो मेरी रूह को करना कैद क़त्ल इम्कान से बाहर है उनके
आज़ाद है अपना दिल शैदा गो लाख ज़ुबाँ पर ताले हैं॥
मग़लूब जो हैं होंगे ग़ालिब महकूक जो हैं होंगे हाकिम।
सदा एकसा वक्त रहा किसका कुदरत के तौर निराले हैं॥
गाँधी ने तरक औ तआऊन का कैसा मंत्र चलाया है।
लरज़ा है जिससे अर्ज़ समाँ सरकार की जान के लाले हैं॥

शहीद गर्जना॥ १०॥

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना।
आज़ाद होगा २ आता है वह ज़माना।

खूं खोलने लगा है हिन्दुस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना॥
क़ौमी तिरंगे झंडे पर जाँ निसार अपनी।
हिन्दू मसीह मुसलिम गाते हैं यह तराना॥
अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना॥
परदेशियों का हम दम जो साथ दे रहे हैं।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना॥
प्रवाह ही अब किसे है जेलो दमनकी प्यारो।
इक खेल हो रहा है फाँसी पै झूल जाना॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना॥

शहीदों के खूं का असर॥ ११॥

शहीदों के खूं का असर देख लेना।
वह पायेंगे थामे जिगर देख लेना॥
किसी के इशारे के हम मुन्तज़िर हैं।
बहा देंगे खूँ की लहर देख लेना॥
झुका देंगे गर्दन हम ज़ेर खंजर।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना॥
जो खुदग़रज़ गोली चलाते हैं हम पर।
ता कदमों में उनका ही सर देख लेना॥
जो नख्ल हमने सींचा है खूने जिगर से।
वह होगा कभी बार वर देख लेना॥
किनारे पै आये भंवर से वह किश्ती।
वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना॥
बलायें वह जायेंगी खुद सर न शुहों।

नहीं होगा इनकी गुज़र देख लेना ॥
खुद ही हुआ हिन्द आज़ाद अपना ।
यह आयेगी एक दिन ख़बर देख लेना ॥

भजन ॥ १२ ॥

चुड़ियाँ पहिन निकाल के घूंघट न दर रहो ।
म..लिमी के साथ जियो या कि मर रहो ॥
तुम माननीय स्वतन्त्रता सभी प्राप्त कर रहो ।
इस में कोई दवाय तुम और उभर रहो ॥
आयें बलायें जितनी पै सीना सिपर रहो ।
हो जाये फाँसी वतन पर तत्पर मगर रहो ॥
जो मुँह से कहा उस पै ही बाँधे कमर रहो ।
मौके प ख़बरदार न हरगिज़ क़तर रहो ॥
हो मर्द तो मैदान में आकर उतर रहो ॥
बेडर रहो, बेखौफ रहो बे ख़तर रहो ।
तुम हो बशर बशर के न ज़ेरा ज़बर रहो ॥
निज मातृ भूमी के लिये तुम चश्मे तर रहो ।
उसके लिये ही हथेली पै रक्खे ही सर रहो ॥
उसके ही ध्यान में सदा शामो सहर रहो ।
कुछ इम्तिहान पर न इधर और उधर रहो ॥
बेकस की तरह तुम न फ़क़त पेट पर रहो ।
शेरानावार जीते रहो शेर नर रहो ॥

वह भाव जो मृत्यु के समय मिस्टर दास के हृदय में गूंज रहे थे भजन ॥ १३ ॥

कहते हैं अलविदा हम अब इस जहान को ।
जाकर खुदा के घर से फिर आया न जायेगा ॥

अहले वतन अगरचे हमें भूल जायेंगे ।
अहले वतन को हमसे भुलाया न जायगा ॥
जुल्मो सितम से तंग न आयेंगे हम कभी ।
हमसे सरे नयाज़ झुकाया न जायेगा ॥
हम जिन्दगी से रूठ के बैठे हैं जेल में ।
अब जिन्दगी से हमको मनाया न जायगा ॥
सच है मौत हम को मिटा देगी दहर से ।
लेकिन हमारा नाम मिटाया न जायगा ॥
हमने लगाई आग है जो इन्क़लाब की ।
उस आग को किसी से बुझाया न जायगा ॥
यारो अब भी है वक्त हमें देख भाल लो ।
फिर कुछ पता हमारा लगाया न जायगा ॥
आज़ाद हम करा न सके अपने मुल्क को ।
'ख़ंजर' यह मुंह खुदा को दिखाया न जायगा ॥

शहीदों की गर्जना ॥२४॥

कर लो क़तल खुशी से हमको उज़र नहीं है ।
प्यारा है वतन अपना जितना कि सर नहीं है ॥
शैदा हम वतन के हैं मर जायेंगे खुशी से ।
हमको इसकी परवाह बिलकुल इधर नहीं है ॥
माता पिता हमारे सिखला चुके हैं हमको ।
मरना सभी को होगा कोई अमर नहीं है ॥
जिसने मनुष्य हो कर रक्खा न वतन को, को ।
सींगों से हीन पामर पशु है व नर नहीं है ॥
जिस पुत्र ने माता की मानी नहीं नसीहत ।
कहने को वह पिसर है जलते जिगर नहीं है ॥

होता रहेगा कब तक जोरो सितम तुम्हारा ।
इसका भी अन्त समझा ईश्वर किधर नहीं है ॥

नौकरशाही का अत्याचार ॥ १५ ॥

बे गुनाहों पर बम्ब की बे ख़तर बौछार को ।
दे रहे हैं धमकीयाँ बन्दूक और तलवार को ॥
बाग जलियाँ में निहत्थों पर चलाई गोलियाँ ।
पेट के भी बल गिराये जुल्म की हद पार को ॥
हम ग़रीबों पर किया जिसने सितम बे इन्तहा ।
याद भूलेगी नहीं उस डायरे बदकार की ॥
या तो हम ही मर मिटेंगे या लेलेंगे स्वराज ।
होता है इस बार हुज्जत खत्म अब हर वारकी ॥
शोर आलम में मचा है लाजपत के नाम का ।
ख्वार करना उनको चाहा अपनी मट्टी ख्वार की ॥
जिसजगह पर बन्द होगा शेर नर पंजाब का ।
आबरू बढ़जायगा उस जेल की दीवार का ॥
जेल में भेजा हमारे लीडरों को बे कसूर ।
लार्ड रीडिंग ने भी अच्छी न्यायकी मरमारकी ॥
खून मज़लूमों की सरयू अब तो गहरी धार में ।
कुछ दिनों में डूबती है आबरू सरकार की ॥

भजन ॥ १६ ॥

अगर आज़ाद गैरों से मेरा हिन्दुस्ताँ होगा ।
तो हरएक चौजबाँ खुशहाल सतयुगका समा होगा ॥
मगर अफ़सोस जकड़ा है गुलामी में मेरा भारत ।
वहदिन अब जल्दी आता है कि अपना राज यहाँ होगा ॥
कहेंगे फिर नहीं जलयाँ में मारो भेड़ बकरी से ।
न रौलट एक्ट ही होगा न गैरों का निशाँ होगा ॥

न होगा मार्शल भी अगर आज़ाद हम होंगे ।
इसी भारत में फिर अर्जुन सा हरएक नौजवाँ होगा ॥
बला से जान भी जाय मगर ईमान रह जाये ।
हमें होगी खुशी जबके हमारा खूँ रवाँ होगा ॥
ये हिन्दी हिन्द के वासी नहीं तोपों से डरते हैं ।
भला कब तक हमारी ये जमी और आसमाँ होगा ॥
महात्मा सत्य गाँधी ने चलाया चक्र चर्खे का ।
इसी से गैर के अन्याय का बस खातमाँ होगा ॥
फलेंगे और फूलेंगे हमारे बाग के बूटे ।
मोती और जवाहर से हमारा बाग़बाँ होगा ॥

देशभक्त बीर की गर्जना ॥ १७ ॥

तेरी जुल्म की हस्ती को ऐ जालिम मिटा देंगे ।
जुबाँ से जो निकालेंगे वह करके दिखा देंगे ॥
भड़क उठेगी जब सीनये सोज़ से दुद आतिश ।
तो हम यह सर्द आह भर कर तुझे ज़ालिम जला देंगे ॥
हमारे आह व नाले का तुम बेसूद मत समझो ।
जो हम रोने प आयेंगे तो एक दरया बहा देंगे ॥
हमारे सामने सख्ती है क्या उन जेलखानों की ।
वतन के वास्ते हम दार पर चढ़ कर दिखा देंगे ॥
हमारी फाके मस्ती कुछ न कुछ रंग लाके छोड़ेगी ।
निशाँ तेरा मिटा देंगे तुझे देंगे जब बददुआ देंगे ॥
हज़ारों देश भक्त अब कौमी परवान हैं ज़िन्दा में ।
हम उनके वास्ते सब माल ज़र अपना लुटा देंगे ॥
कुछ इसमें राज़ था मुद्दत से जो ख़ामोश बैठे थे ।
हम अब करने पै आये हैं तो कुछ करके दिखा देंगे ॥
अगर कुछ भेट आज़ादी को देवो हमसे माँगे गी ।

समझ कर हम जहे किस्मत सब अपना सर चढ़ा देंगे॥
नहीं मंजूर अब इज्जत हमें सर माये दारों की ।
बना कर शाह कृति को सिंहासन पर बिठा देंगे ॥

राष्ट्रिय झण्डा ॥ १८ ॥

प्रेमिक विश्व तिरंगा प्यारा झंडा ऊँचा रहे हमारा ।
सदा सक्ति बरसानेवाला, प्रेम सुधा सरसानेवाला॥
वीरों को हरसाने वाला मातृ भूमीका तन मन सारा ॥१॥
स्वतंत्रताके भीषण रणमें, लखकर बड़े जोश क्षण २ में ॥
काँपे शत्रु देखकर मन में, मिट जाय भय संकट सारा ॥२॥
इस झंडेके नीचे निरभय ले स्वराज हम अविचल निश्चय।
बोलो भारतमाता की जय, स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा ॥३॥
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्मपर बलि २ जाओ ।
एकसाथ सब मिलकर गाओ प्यारा भारत देश हमारा॥४॥
इसकी शान न जाने पाये चाहे जान भले ही जाये ।
विश्व विजय करके दिखलायें, तब होय प्रण पूर्ण हमारा॥५

वीर हृदय ॥ १६ ॥

देश की ख़ातिर मेरी दुनियाँ में गर तौक़ीर हो ।
हाथों में हो हथकड़ी पावों पड़ो ज़ंजीर हो ॥
आँखों की ख़ातिर तीर हो मिलती गले शमशीर हो ।
इससे भी बढ़ कर कोई दुनिया में गर तौक़ीर हो ॥
मरकर भी मेरी जान पर जहमत बिना ताख़ीर हो ।
मेरो ख़ातिर ख़ास कर द जख नया तामीर हो ॥
सूली मिले फाँसी मिले फिर मौत दामनगीर हो ।
देश के ख़ातिर सभी यह आफतें मंजूर हो मंजूर हो ॥

असहयोग ॥ १६ ॥

तब्दील गवर्नमेंट की रफ़तार न होगी ।

गर क़ौम असहयोग पर तय्यार न होगी ॥
बन जायेंगे हर शहर में जलियाने वाले बाग ।
इस मुल्क से गर दूर यह सरकार न होगी ॥
ये जेल खाने टूट कर अब और बनेंगे ।
इसमें तमाम क़ौम गिरफ्तार न होगी ।
सौदाई हैं हम वतन के लोहे की बेड़ियाँ ।
सोने के ज़ेवरों में झंकार न होगी ॥
दुश्मन का असहयोग से हम ज़ेर करेंगे ।
इन हाथों में बन्दूक या तलवार न होगी ॥
कुछ मिल गये हैं ऐसे मुसलमान व हिन्दु ।
बस अब तमीज़ तस्बीह व ज़िन्नार होगी ॥
हम ऐसी हकूमत को मिटा देवेंगे बिल्कुल ।
गम में हमारे जो कभी गम ख्वार न होगी ॥

स्वतन्त्रता-पूजन ॥ २० ॥

अधीन होकर बुरा है जीना, मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ।
सुधाको तजकर ज़हरका प्याला है पीना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
पड़ी हों हाथोंमें हथकड़ी यदि तो स्वर्गके सुखसे लाभ क्या है ।
नरकके दुखमें निवास निशदिन है करना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
जो दास होकर मिलें भवनमें सौस्वादु भोजन तो तुच्छ हैं सब ।
सदैव उपवास करके बनमें विचरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
मिलें उपाधियाँ मान पदवी जो सेवा करके तो व्यर्थ हैं सब ।
घृणाके गड्ढे में होके व्याकुल उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥

आवाहन ॥ २१ ॥

कसली है कमर अब तो कुछ करके दिखा देंगे ।
आज़ाद हो होंगे या सर ही कटा देंगे ॥

हटने के नहीं पीछे डरके कभी ज़ुल्मो से ।
तुम हाथ उठाओगे हम पैर बढ़ा देंगे ॥
बे शस्त्र नहीं हैं हम बल है हमें चर्ख़े का ।
चर्ख़े से ज़मी का हम तो चर्ख़ गुँजा देंगे ॥
परवाह नहीं कुछ दम की, गमकी नहीं मातम की ।
है जान हथेली पर यह पल में गंवा देंगे ॥
उफ़ तक भी ज़बाँ से हम हरगिज न निकालेंगे ।
तुम तलवार उठाओगे हम सर को झुका देंगे ॥
सीखा नया हमने लड़ने का यह तरीक़ा ।
चलवाओ गन मशीने हम सीना अड़ा देंगे ॥
दिलवा दो हमें फाँसी ऐलान से कहते हैं ।
खूँ से ही सहीदों के हम फौज बना देंगे ॥
"मुसाफ़र" अन्डमन के जो तू ने बनाये ज़ालिम ।
आज़ाद ही होने पर हम उनको बुला लेंगे ॥

उम्मीद की झलक ॥ २२ ॥

अरूजे कामयाबी पर कभी हिन्दोस्ताँ होगा ।
रिहा सैयाद के हाथों से अपना आशताँ होगा ॥
चखायेंगे मज़ा बरबादिये गुलशन का गुलची को ।
बहार आजायगी उसदिन जब अपना बाग़बाँ होगा ॥
वतन की आबरू का पास देखे कौन करता है ।
सुना है आज मक़तल में हमारा इम्तहाँ होगा ॥
जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दे वतन हरगिज़ ।
न जाने बाद मुर्दन मैं कहाँ और तू कहाँ होगा ॥
यह आये दिनकी छेड़ अच्छी नहीं ऐ खञ्जरे क़ातिल ।
बता कब फ़ैसला उनके हमारे दर्मियाँ होगा ॥
शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले ।

वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा ॥
कभी वह दिन भी आयेगा कि जब स्वराज देखेंगे ।
जब अपनः ही ज़मीं होगी जब अपना आसमाँ होगा॥

भजन ॥ २३ ॥

उजड़ा हुआ पड़ा है सब गुलिस्ताने भारत ।
बरबाद हो चुका है जन्नत निशाने भारत ॥
पहले तमाम बाकै सब हो गये फ़साने ।
जाती रही यकायक वह आन बान भारत ॥
भारत की हाय किश्ती गरदाब मे फँसी है ।
किस नींद सो रहे हो ए कश्ती वान भारत ॥
उठ बैठो नौ जवानो अब तो इसे बचालो ।
कुछ २ अभी है बाकी नामो निशान भारत ॥
गर होश में तुम आओ तो कुछ नहीं है मुश्किल ।
फिर यही देख लेना पहली सी शान भारत ॥
मालूम है तुम्हें कुछ रोज़े अजल के सबक़े ।
उस्ताद रहते आये हैं आलिमाने भारत ॥
लेकिन हमारा भारत अब रहम के है क़ाबिल ।
बहशी कहा रहे हैं बाशिन्दगाने भारत ॥
गर है तुम्हें मुहब्बत इस गुलशने वतन की ।
ये अहद दिल से कर लो ऐ बुलबुलाने भारत ॥
जब तक कै दम में दम है हर दम रहेंगे इसके ।
ये सर नज़र है इसकी ये जाँ है जाने भारत ॥

देश के व्यापारियों से प्रार्थना ॥ २४ ॥

देश के व्यापारियो ! मेरी विनय सुन लीजिये ।
केवलअवण से काम क्या ! कुछ ध्यान इसपर दीजिये ॥

तुम मजे में सो रहे नहीं ध्यान है कुछ देश का।
निज नेत्र खोलो, दृश्य देखो वेश भारत देश का ॥
भ्रातृगण अब भी उठो सोते समय अति होगया।
ध्यान इस लोकोक्ति पर दो "सोगया सो खोगया" ॥
सब देशवासी जग उठे तुम नींद में क्यों सो रहे।
कुछ कर दिखाओ आप भी जीवन वृथा क्यों खो रहे॥
है अगर जीना तुझे मरजा वतन पर नाम कर ॥२५॥
सौ तरीके काम करने के हैं कोई काम कर।
जिस तरह भी हो सके दुनियाँ में पैदा नाम कर ॥
काम करने का जमाना आगया है काम कर।
चार दिन दिक्कत उठा कर उम्र भर आराम कर ॥
आज है किस सोच में, किस फिक्र में बैठा हुआ।
है अगर जीना तुझे, मरजा वतन पर नाम कर ॥
ऐ मेरे सैयाद तुझसे और कुछ कहना नहीं।
हाँ समझ कर सोच कर मुझको असीरे दाम कर ॥
नाम अगर मरने पर हो तो नाम वह किस काम का।
नाम के मानी तो यह है जिन्दगी में नाम कर ॥
जिससे दुनियाँ दंग हो जिस से जमाना दंग हो।
ख्वाबे ग़फ़लत से अब उठ कर तू भी ऐसा नाम कर॥
हो रहेगा बस वही जो कुछ कि है तक़दीर में।
रात दिन नाहक़ न फिक्रे गरदिशे अय्याम कर ॥
जाके यह कहदे जरा बे दर्द क़ातिल से कोई।
कुछ समझकर सोचकर 'बिस्मिल' को तू बदनाम कर॥

भजन ॥ २६ ॥

चर्खा नहीं है भाइयो यह चक्र है भगवान का।
शुभ सर्वथा साधन यही है देश के उत्थान पर॥

चर्खे बिना ये देश चर्खा हो रहा है सर्वथा ।
देखी नहीं जाती है अब देश की दुस्तर व्यथा ॥
चिकन मलमल भी रही प्रसिद्ध ढाके की सदा ।
भागलपुरी का धोतिया प्रख्यात था यहां पर सदा ॥
जो लोइयां और पट्टियां कश्मीर में बनती रहीं ।
कमखाब साटन में नहीं काशी की समता थी कहीं ॥
परमात्मा साक्षी रहे यह बात भी धारण करो ।
अब वस्त्र देशी सूत देशी का सभी धारण करो ॥
नंगे रहें भूखों मरें अरु दाम बहु देना पड़े ।
परमात्मन् तो भी विदेशी वस्तु नहीं लेना पड़े ॥
प्रचार चर्खे का करो भारत निवासी प्रेम से ।
नर नारि सब चर्खे चलावें नित्य ही शुभ नेम से ॥
इस चक्र चर्खे से कहीं भी दुश्मन बच सका नहीं ।
सत्कर्म अरु शुभ शांतिसा शस्त्र क्या होगा कहीं ॥
जो गुड़ खिलाने में मरे तो विष न देना चाहिये ।
सुख शांति से स्वाधीनता अरु स्वत्व लेना चाहिये ॥
बिन्ती गदाधर की यही है देश भारतवर्ष से ।
चर्खा चलाने में लगें नर नारियाँ सब हर्ष से ॥

मेरी भावना ॥ २७ ॥

न चाहूं मान दुनियाँ में न चाहूं स्वर्ग का जाना ।
मुझे वर दे यहां माता रहूँ भारत पै दीवाना ॥
करूं मैं मुल्क की सेवा पड़े चाहे करोड़ा दुख ।
अगर फिर जन्म लूँ आकर तो भारत में ही हो आना ॥
लगा रहे प्रेम हिन्दी में पढ़ूं हिन्दी लिखूँ हिन्दी ।
चलन हिन्दी चलूँ हिन्दी पहरना ओढ़ना खाना ॥

भवन में रोशनी मेरे रहे हिन्दी चिराग़ों की ।
स्वदेशी ही रहे बाजा बजाना राग का गाना ॥
लगे इस देश ही के अर्थ मेरे धर्म विद्या धन ।
करूँ मैं प्राण तक अर्पण यही प्रण सत्य है ठाना ॥
नहीं कुछ ग़ैरमुमकिन है जो चाहो दिलसे बिसमिल तुम ।
उठा लो देश हाथों पर न समझो अपना बेगाना ॥

वीर भावना ॥ २८ ॥

आता मौत से क्या है अमर है आत्मा मेरा ।
नहीं कुछ कारगर होने की उस पर तेग यह तेरी ॥
इसे छेदे इसे काटे कहाँ यह तीर की ताक़त ।
इसे बांधे इसे जकड़े कहाँ जंजीर की ताक़त ॥
गला सकता नहीं उसको सुन ओ बेदादगर पाजी ।
जला सकती नहीं है आग को भी शोला अफ़शानी ॥
वतन पर ही मिटूँगा मैं वतन ही मुझ को प्यारा है ।
यही हमदर्द है मेरा यही मेरा सहारा है ॥
वतन के वास्ते दाम ने खुद जान तक वारी ।
सहे दुख हर तरह के और मुसीबत झेल ली सारी ॥
वतन के वास्ते राणा ने सौ आफ़तें झेलीं ।
बलायें सैकड़ों सिर पर हज़ारों आफ़तें लेलीं ॥
दिखा दूँगा कि इन वीरों की एक औलाद हूं मैं भी ।
वतन पर जान देने के लिये दिल शाद हूँ मैं भी ॥
तक़ाज़े ख़ौफ़ से अपने इरादे को न छोड़ूँगा ।
मरूँगा जान दे दूँगा वतन से मुँह न मोड़ूँगा ॥
तमन्ना ज़िन्दगी की है न कुछ इज्जत के लेने की ।
जो ख़्वाहिश है तो बस अपने वतनपर जान देनेका ॥
गमे रंजो अलम सिर पर जो आजायें वह ले लेना ।

सुनो ऐ हाज़रीन तुम भी वतन पर जान दे देना ॥

भजन ॥ २९ ॥

हमें विश्वास है भारत का दिन अब फिरने वाला है ।
हमारे देश के बच्चों ने होश अपना संभाला है ॥
बहुत दिन होगये हमको अँधेरी रात में सोते ।
मगर जल्दी ही परदा आँखों से अब हटने वाला है ॥
भँवर घबराता है क्योंकर कि अब थोड़ासा बाक़ी है ।
निकल आया है अब सूरज कमल भी खिलने वालाहै॥
मलेंगे हाथ यह सुन कर विचारे तङ्ग दिल वाले ।
सुनहरे बादलों से आसमाँ अब घिरने वाला है ॥
जिगर होजायगा रोशन अँधेरा बे निशाँ होगा ।
मिलेगा तुमको खुदबखुद जो 'माधव' मिलनेवाला है ॥

भजन ॥ ३० ॥

खुदाया ! कैसी मुसीबतों में ये हिन्दवाले पड़े हुये हैं ।
कदम २ पर हमारी खातिर सितमके छाले पड़े हुये हैं ॥
हमारे महमान जो आये बनकर वह ज़ुल्म करने लगे हमी पर ।
ग़ज़ब है अपने मकान वाले मकान से बाहर खड़े हुये हैं ॥
सिरों पै आफत पड़ी हुई है गले में खंजर अड़े हुये हैं ।
दिलों में नश्तर चुभे हुये हैं जिगर में छाले पड़े हुए हैं ॥
हज़ारों बच्चोंसे बाप बिछुड़े वह तेगे किस्मतके होके टुकड़े ।
सुहागनों के सुहाग उजड़े घरों में ताले पड़े हुये हैं ॥
हवा जमानेको बिगड़ी आकर वह ज़ुल्म करने लगे सरासर ।
सुनायें फरियाद किसको जाकर ज़ुबाँ पै छाले पड़े हुये हैं ॥

भजन ॥ ३१ ॥

नाम ज़िन्दों में लिखा जायँगे मरते मरते ।
ताज भारत को रखा जायँगे मरते मरते ॥

जान पर खेल ही जायँगे अगर हम तो भी ।
सैकड़ों को ही जला जायँगे मरते मरते ॥
जुल्म करता है बहुत हिन्द पै नाकर शाहा ।
उसकी यह बदचाल मिटा जायँगे मरते मरते ॥
वह कोई और ही होंगे जो हैं रोके रुलाके मरते ।
हम रकीबों को हंसा जायँगे मरते मरते ॥
जेल खानों की भी खुश होके बढ़ायें रौनक ।
एक क्या लाखों बना जायँगे मरते मरते ॥
खाक में जिस्म किसी और का मिलता होगा ।
हमतो भूखों को खिला जायँगे मरते मरते ॥
तराना लब आयँगे जिस वक्त रकीबे नादान ।
खूब तक अपना पिला जायँगे मरते मरते ॥

भारत माता का उपदेश ॥ ३२ ॥

होकर जवान बच्चो ! मत भूल मुझको जाना ।
मैं कष्ट पा रही हूं आज़ाद तुम कराना ॥
पढ़कर विदेशी भाषा और सभ्यता में आकर ।
निज मातृ-भूमि भाषा, को भूल तुम न जाना ॥
खद्दरसे तनको ढकना, पुरुषोंकी चाल चलना ।
निज देश की कमाई फैशन में मत लुटाना ॥
बनकर अमीर, हाकिम, धन, मान, पद के मदमें ।
गर्दन पै निर्बलों की तुम मत छुरी चलाना ॥
तुम नंगे भूखे रहना, सूखे चने चबाना ।
पर देशद्रोही बन कर मेरी कोख मत लजाना ॥
हँस २ के कष्ट सहना मरना भी मिट भी जाना ।
परतन्त्रता में लेकिन जीवन न तुम बिताना ॥

"हम हिन्द के हैं बच्चे, हिन्दोस्ताँ हमारा।"
निर्भय होके निश दिन गाना यही तराना॥

भारतमाताके सच्चे सुपुत्रकी प्रतिज्ञा॥ ३३॥

ए! जन्मभूमि जननी! सेवा तेरी करूँगा।
तेरे लिये जिऊँगा, तेरे लिये मरूँगा॥
हर जगह; हर समय में तेरा हो ध्यान होगा।
निज देश, भेष भाषा का भक्त मैं रहूँगा॥
संसार की विपत्ति हँस हँस के सब सहूँगा।
पर देश द्रोही बन कर यह पेट नहीं भरूँगा॥
धन माल और सर्वस्व यह प्राण वार दूँगा।
पर मान तेरा माता जाने नहीं मैं दूँगा॥
होगी हराम मुझको दुनियाँ की ऐशो अशरत।
जब तक स्वतन्त्र तुझको माता मैं कर न लूँगा।
कह २ के मात! तेरे दुख दर्द की कहानी॥
भारत की लता पेड़ों तक को जगा मैं दूँगा॥
"हम हिन्द के हैं बच्चे हिन्दोस्ताँ हमारा।"
मैं मात! मरते दम तक कहता यही रहूँगा॥

झण्डा नहीं झुकेगा झण्डा नहीं झुकेगा॥ ३४॥

भारत के लालने जब ऊपर इसे उठाया।
आज़ादी का सन्देश कुल मुल्क को सुनाया॥
जय जय का शोर इसके चारों तरफ से आया।
हर एक बाहया के दिल में यही समाया॥
झण्डा नहीं०
अपनी स्वतन्त्रता पर सर्वस्व वार देंगे
घटने न देश का हम अपने विकार देंगे॥

क़ौमी निशान पर हम होने न वार देंगे ।
दुश्मन को देखते ही बस यह पुकार देंगे ॥

झण्डा नहीं०

क़ुर्बान तन है इस पर इस पर निसार मन है ।
समझे हुये इसी को हम अपना धर्म धन है ॥
साये में इसके हाज़िर सब अपने हम वतन हैं ।
हिन्दू है या मुसलमाँ सिक्ख है या कृश्चियनहैं॥

झण्डा नहीं०

गद्दार भाग जायें वह अब मुँह न दिखायें ।
इज़्ज़त गँवा रहे हैं तो अपनी वह गँवायें ॥
परवाह नहीं ज़रा भी आयें बलायें आयें ।
जितने उठा सकें वह कितने यहाँ उठायें ॥

झण्डा नहीं०

साये में इसके हम सब एक जान होचुके हैं ।
आज़ादी के हमारी सामान हो चुके हैं ॥
इसके हज़ारे हम पर अहसान हो चुके हैं ।
लाखों जवान इस पर कुर्बान हो चुके हैं ॥

झण्डा नहीं०

स्वाधीनता पताका आज़ादी का अमल है ।
प्राणों पै आ बनेगी किसको यहाँ यह ग़म है ॥
दमख़म है किसमें ऐसा कर सकता कौन ख़म है ।
जबतक कि जाँ में जाँ है जबतक कि दममें दम है ॥

झण्डा नहीं०

छोड़ा है मौत का डर तो किससे अब डरेंगे ।
आगे बढ़े हैं सब क्या पीछे क़दम धरेंगे ॥

सीने पै गोली खाकर हरगिज़ कफ़न उड़ेंगे ।
जूझे भी तो यही हम कहते हुये मरेंगे ॥

झगड़ा नहीं०

तराना फ़लक ॥ ३५ ॥

बाग़ से सर सर का झोंका आश्याना लेगया ।
अन्दलीबों को कफ़स में आबोदाना लेगया ॥
कौन कहता है ज़बरदस्ती से हम पकड़े गये ।
जेल में खुद हमको शौके जेलखाना लेगया ॥
कुछ गुलो गुलचीका शिकवा बुलबुले भारत न कर ।
तुझको पिंजरा में है तेरा चह चहाना लेगया ॥
एक सौ चवालीस की तोहमत का झगड़ा है अबस ।
जेल में तुझे का तेरा मुल्की तराना लेगया ॥
देशभक्ति की सज़ा देनी उसे मंजूर थी ।
ज़ाहिर करके बग़ावत का बहाना लेगया ॥
क्यों घटा अदबार की छाई है अहले हिन्द पर ।
छीन कर यूरुप है सब मालो खज़ाना लेगया ॥
पूछते क्या हो ज़मीदारों की दौलत क्या हुई ।
कुछ वकील और कुछ नशा कुछ मालखाना लेगया ॥
शूमिये किस्मत से इक दाने को हम तरसा किये ।
झोलियाँ भर कर भारत का कुल ज़माना ले गया ॥
भूख से क्यों न तड़पें हिन्द के बच्चे फलक ।
खेंच कर राली बरादर दाना २ लेगया ॥

वीर गर्जना ॥ ३६ ॥

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना ।
प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना ॥
मत बुज़दिली को हरगिज़ तुम पास दो फटकने ।

आखिर तो तुम अदम को होगा कभी रवाना ॥
स्वतन्त्रता देवी के तुम जल्दी बनो उपासक ।
निज पूर्वजों का तुम को गर नाम है चलाना ॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं ।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना ॥
दृढ़ सत्य पर रहो तुम धारण करो अहिंसा ।
आकर के जोश में तुम हुल्लड़ नहीं मचाना ॥
माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित ।
वालंटियर बनो तुम अब छोड़ दो बहाना ॥
दिलमें झिझक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ ।
है स्वर्ग के बराबर इस वक्त सूली खाना ॥
"सरजू" समय यही है कुछ करलो देश सेवा ।
दो दिनकी जिन्दगी है इसका नहीं ठिकाना ॥

जितेन्द्रदास-गीत ॥ ३७ ॥

क्या लिखें आज़ाद होकर हम कहानी 'दास की" ।
दिल अगर हो तो सुनो दिल से कहानी दास की ॥
फाके मस्ती में भी मस्तों की तरह वो मस्त था ।
जेल में ही कट गई सारी जवानी दास की ॥
शोक से दुनिया के लोगों का यहां कहना पड़ा ।
देश सेवा के लिये थी जिन्दगानी दास की ॥

फिर वही रणभेरी ॥ ३७ ॥

रण भेरी बज चुकी वीर वर पहनो केसरिया बाना ।
आज तुम्हें फिर सज्जित होकर युद्धक्षेत्र में है जाना ॥

१

उमड़ रहा उत्साह आज का कैसा दृश्य निराला है ।
जिसने मृतक देह में भी फिर से नवजीवन डाला है ॥

किस उमँगसे खड़ा हुआ यह सैनिक दल बलवाला है।
रिपु दलका दिल दहलानेको यह जयघोष निकाला है॥
करके आज दिखा दो उसको जो कुछ है मन में ठाना।
रणभेरी बज चुकी वीरवर पहनो०

२

आज तुम्हारे नेत्रों में क्या भरी रोष की है लाली।
क्या तुमने इस नये जोश की है केवल मदिरा ढाली॥
जिसे पान कर आज तुम्हारी जाती होरही मतवाली।
ठंढा वह उत्साह होगया जहाँ हुई खाली प्याली॥
इस शब्द को सत्य बना कर मा दूध न लजवाना।
रणभेरी बज चुकी वीर वर पहनो०

३

रक्त बहाये बिना नहीं जगत में किसी को मान मिला।
और प्राण भय से छिपने से किस २ को अमृत्व मिला॥
इच्छा पूर्वक जीने का जग में किसे महत्व मिला।
प्राण दिये जिसने स्वदेश पर उसको जीवन तत्व मिला॥
क्रान्ति मचा दो जग में यदि तुमको है मानव कहलाना।
रणभेरी बज चुकी वीरवर पहनो०

४

आज हमारा नायक छल से नादर शाही ने छीना।
समझ रही है मातृ भूमी को अब तो वह अबला दीना॥
होकर ही आज़ाद रहेंगे करलें अब ऐसा कीना।
आओ वीर अड़ादो बढ़ कर तोपों के आगे सीना॥
मिला सुअवसर आज हमें रण का है दिखलाना।
रणभेरी बज चुकी वीर वर पहनो०

५

मृत्यु मिले या अक्षय जीवन इसकी कुछ परवाह न हो।
सत सदन या कारागृह हो दोनोंकी कुछ परवाह न हो॥
साहस लेलो काम बन्धुवर कष्टोंकी कुछ आह न हो।
लगी रहे बस दृष्टि ध्येयपर क्षण भंगुर उत्साह न हो॥
एक मात्र है लक्ष हमारा निज स्वतन्त्र का पाना।
रणभेरी बज चुकी वीर वर पहनो०

६

जिसके प्राण हथेली पर हों उसको फिर किस का भय है।
निश्चय होगी विजय हमारी यही हममें दृढ़ निश्चय है॥
सत्याग्रह का सफल अस्त्र है कर में फिर क्या संशय है।
बढ़े चलो उत्साह सहित बस रखी हाथों में जय है॥
मर जाना या मातृ भूमी के सच्चे सेवक कहलाना।
रणभेरी बज चुकी वीर वर पहनो०

भजन नं० ॥ ३८ ॥

दुआ लेलो यही दिन हैं विचारी हिन्द मादर से।
जवानो मिल नहीं सकता ये मौक़ा फिर नये सर से॥
मिली होगी किसी नेशन को आज़ादी मुक़द्दर से।
हुआ होगा किसी का राज हम तो उम्र भर तरसे॥
शहीदों का लहू गर देश पर बरसे तो यूं बरसे।
हो पैदा नौनिहाले क़ौमियत भारत में घर घर से॥
बेचारी मादरे भारत की हालत पूछते क्या हो।
पड़ी है अपने मुँह को वह ढके ग़ैरत की चादर से॥
मुझे इस क़द्र नफ़रत है हथकड़ियों कंगन से।
बन्धेगा एक दिन सेहरा शहादत का तेरे सर से॥
तुम्हारी सर फ़रोशी और किस दिन काम आयेगी।

किसी दिन मर रहोगे तुम यूं ही गैरों की ठोकर से ॥

भजन नं० ॥ ३६ ॥

नौ जवानो वतन का कुछ काम करना सीख लो।
तुम सहो सौ आफ़तें लेकिन न हो अबरू पै बल ॥
सर को भारत अर्ष पर कुर्बान करना सीख लो ॥
दुशमनों को भी दिखाओ वतन भारत का समर।
मौत के रस्ते पै तुम हरदम विचरना सीखलो ॥
कौन कहता है कि मुल्की काम में हिस्सा न लो।
जंगे आज़ादी के झण्डे तले एकत्र होना सीख लो ॥
जान देदी थी जैसे प्रताप ने निज देश पर
वैसे ही तुम वतन का उद्धार करना सीख लो ॥

भजन ॥ ४० ॥

गांधी तू आज हिन्द की एक शान बन गया
सारी मनुष्य जाति का अभिमान बन गया ॥
तू सत्य अहिंसा दया निस्वार्थ त्याग से।
इस आज मृत्यु लोक में भगवान बन गया ॥
तेरा प्रभाव सादगी हस्ती को देख कर
दुश्मन भी बे ज़बान हैरान बन गया ॥
तेरी नसीहतों में वह जादू का असर है
जिसको लगी हवा तेरी इन्सान बनगया॥
तू दोस्त है हर क़ौम का हरदिल अज़ीज़ है।
सारा जहान तेरा क़दरदान बन गया ॥
गो हिन्द आज उठ न सका बायसे तक़दीर।
फिर भी स्वराज लेने का सामान बन गया ॥
धिक्कार है भाइयो हमें तैंतिस करोड़ को।
तुझसा फ़कीर जेल का महमान बन गया ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 818
Date 22-12-71
OF INDIA

भजन ॥ ४१ ॥

दूर आँखों से हो यह कब है गवारा गाँधी ।
बैठते उठते कर तेरा नज़ारा गाँधी ॥
दिलसे जी से यही अब कहते हैं दौलत वाले ।
है ग़रीबों की ग़रीबी का सहारा गाँधी ॥
क्या तमाशा यह तमाशा है कि नश्तर बनकर ।
उनकी आँखों में खटकता है हमारा गाँधी ॥
आफ़तें आईं तेरे सर पै बलायें आईं ।
है वतन के लिये सब तुझको गवारा गाँधी ॥
दिल से जी से वह हमेशा के लिये दास हुआ ।
कर लिया जिसने कभी तेरा नज़ारा गाँधी ॥
जिसको यहाँ कहता बड़े दर्द के साथ ।
हाय गया आज नज़र बन्द प्यारा गाँधी ॥
सारी दुनिया में ज़माने में पड़े एक हलचल ।
तू जो करदे किसी जानिब को इशारा गाँधी ॥
क़ैद ख़ाने में पड़ा है 'बिसमिल' ।
देश भारत का चमकता हुआ गाँधी ॥

भजन नं० ४२ ॥

बुज़दिलों ही को सदा मौत से डरते देखा ।
गो के सौ बार उन्हें रोज ही मरते देखा ॥
मौत से वीर को हमने न कभी डरते देखा ।
दूसरे मौत पै भी सदा खेल ही करते देखा ॥
मौत जब एक दिन आना है तो डरना है क्या ।
हम सदा खेल ही समझा किये मरना क्या है ॥

वतन हमेशा रहे शाद काम और आज़ाद ।
हमारा क्या है अगर हम रहे रहे न रहे ॥

भजन ॥ ४३ ॥

मिटेंगे देश पर अपने यही दिल में समाई है ।
करें आजाद भारत को यही दिल में समाई है ॥
नहीं है ज्ञात क्या उनको कि भारत वीर भूमी है ।
करें बरबाद हम उनको कि जिनसे कुछ दुश्मनाई है ॥
कटायेंगे गला बेशक मगर यह ध्यान में रखना ।
मिटेंगे हम मिटा कर के शपथ हमने यह खाई है ॥
क्या शै है जेल और फाँसी डराते हो हमें जिनसे ।
करें आदर्श पर तिल २ न वह भी दुखदाई है ॥
करो ज़ुलमो सितम बेशक मगर यह भूल मत जाना ।
नहीं अपमान सह सकते जो भारत के शैदाई हैं ॥

नौजवानों की तमन्ना ।

मुर्दा भारत को जिला जायेंगे मरते २ ।
नाम जिन्दों में लिखा जायेंगे मरते २ ॥
हमको कमजोर समझ बैठे हमारे दुश्मन ।
उनका अभिमान मिटा जायेंगे मरते २ ॥
ज़ुल्म करती है बहुत हिन्द पै नौकरशाही ।
उसकी यह बदख्याल मिटा जायेंगे मरते ॥
जेलखानों की भी खुश होके बढ़ायें रौनक ।
एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते २ ॥
हैं तो ना चीज मगर इतनी ज़ुर्रत रखते हैं ।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायेंगे मरते २ ॥
भगतसिंह दत्त दयानन्द तिलक गांधी का ।
सबको फरमान सुना जायेंगे मरते २ ॥

भजन ॥ ४४ ॥

दिखायेंगे यह अरकाने हकूमत शेखियां कबतक ।
हमारे सब्र का उड़ता रहेगा धाज्जियां कबतक ॥
जमीने हिन्द में क़ायम रहेंगी सख़्तियां कबतक ।
तशद्दुद की फ़िज़ा और जफ़ा की आंधियां कबतक ॥
इधर जानों की बाजी है उधर कानून बनते हैं ।
हमारे नौ जवानों की मिटेंगी हस्तियां कबतक ॥
शहादत दास की आख़िर बहुत बारे गरां होगी ।
दिखायेगी हुकूमत अपनी हीला साज़ियां कबतक ॥
बहुत दुश्वार होगा इससे अब ओहदा बरा होना ।
सितमगारो का मँडलाता रहेगा आसमां कबतक ॥
नया जज़्बा निहायत ज़ोर से चेलेंज देता है
जफ़ाकारी की ताक़त लेगा मेरा इम्तिहां कबतक
सदा पंजाब की जो है वही अमरोहे में उठेगा
खुदा जाने कि बढ़ता जायेगा यह दास्तां कबतक
नहीं मालूम कितने ग्रामे जन इस राह पर होंगे ।
मुहिब्बाने वतन की होंगी यह कुर्बानियां कबतक ॥
जो इज़हारे हक़ीदत है वही है राय पब्लिक की
लिये जायेगी नौकरशाही इसका इम्तिहां कबतक ॥

॥ समाप्त ॥

मिलने का पता

दफ्तर कांग्रेस कमेटी अमरोहा ।